International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(II), January - March, 2022, pp.155-158

भारत में नारीवाद के नवीन परिप्रेक्ष्य

डॉ. प्रीति परिहार (भाटी)*

सार

नारीवाद एक आंदोलन है। स्त्री द्वेष और महिलाओं के शोषण के विरूद्ध नारीवाद केवल महिलाओं के लिए समानता प्राप्त करने के विषय में नहीं है। नारीवाद के माध्यम से भारत में नवीन क्रान्ति ने जन्म लिया है। भारत में स्त्री पुरूष की असमानता को समाप्त कर नारी शक्ति ने अपना वर्चस्व स्थापित किया है।

***मुख्य शब्दः** नारीवाद, नारी शक्ति, स्त्री द्वेष, फेमिनिज्म, एनसाक्लोपीडिया।*

---

i:Lrkouk

नारीवाद का अर्थ व परिभाषा

नारी या फेमिनिज्म शब्द का मूल फ्रांसीसी शब्द फेमिनिज्म (Feminise) जिसका तात्पर्य नारी स्वतंत्रता है। एनसाक्लोपीडिया ऑफ फेमिनिज्म में इसकी उत्पत्ति लेटिन के फेमिना शब्द से हुई है जिसका अर्थ नारी है। पहले इसका प्रयोग उसके लिए होता था जिसमें स्त्री के युग सम्मिलित हो। बाद में यह शब्द स्त्री–पुरूष समानता के लिए जो आंदोलन चलाये गये उसके लिए प्रयुक्त होने लगा। सर्वप्रथम यह शब्द 'वुमेनिज्म' था किन्तु 1890 में आलीस रोजी ने पहले पहल 'फेमनिज्म' का प्रयोग किया। अब इस शब्द का प्रयोग 'स्त्री–पुरूष' आंदोलन के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है।

'फेमनिज्म' को अनेक विद्वानों ने विश्लेषित करने का प्रयास किया है, इनमें थोड़ा बहुत फर्क दिखायी देता है। कोशों में इसकी परिभाषा "स्त्री–पुरूष समानता की माँग या स्त्री की द्वितीय गोणावस्था को दूर करने की कोशिश" दी गयी है।

डोना हास्कर्ट और स्यूमोटो के मत में फेमिनिज्म एक गद्यात्मक सिद्धांत है, जो हमेशा बदलता रहता है। इसके विभिन्न पहलु हैं – वैयक्तिक राष्ट्रीय और दार्शनिक। यह समय की पुकार है, यह महज विश्वास नहीं है, उन्हें बदलना इसी दृष्टिकोण के आधार पर फेमिनिज्म का उदय हुआ है।

मिल्लीसेन्ट ज्यारट फासेट ने कहा है "फेमिनिज्म का लक्ष्य स्त्री के प्राकृतिक विकास के साथ किसी कार्य को कार्यान्वित करने की वैधानिक स्वतंत्रता तथा उसके लिए उसे योग्य बनना है।"

भारतीय संदर्भ में नारीवाद

भारतीय नारीवादी चिन्तन में पश्चिमी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है क्योंकि मूल रूप से नारीवाद का वर्तमान स्वरूप पश्चिम से लिया जाता है। पश्चिमी की दृष्टि, परिप्रेक्ष्य व मुद्दे सर्वभौमिक नहीं हो सकते, किन्तु वे एक विश्व दृष्टि का निर्माण करते हैं। जिसे सामाजिक व सांस्कृतिक आधारों पर तुलनात्मक रूप से

---

* व्याख्याता, राजनीति विज्ञान, टैगोर पी.जी. गर्ल्स कॉलेज, वैशाली नगर, जयपुर, राजस्थान।

आँकना आवश्यक है। भारतीय नारी की प्रस्थिति व छवि का निरूपण शास्त्रीय, धार्मिक व पौराणिक ग्रंथों में दृष्टिगोचर होता है। इन ग्रंथों में नारी के सकारात्मक 9 दिव्यस्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। पौराणिक ग्रंथों में प्रमुख शक्तियों की स्थापना नारी के रूप में प्रस्तुत कर उसकी दिव्या स्थापना की प्रक्रिया व प्रतिमान का परिचालक है।

भारतीय समाज में स्त्रियों को ज्ञान एवं शक्ति का प्रतीक माना गया है। इस प्रतीकों के रूप में भारतीय समाज में नारी को दुर्गा, लक्ष्मी के रूप में पूजा जाता है तथा उसे पुरूष का आधा अंग माना जाता है तथा उसे अर्द्धांगिनी के रूप में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। स्त्री को परिवार की एक धुरी माना जाता है जिसके बिना परिवार का कोई भी शुभ कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। नारी परिवार की नींव है। परिवार व समुदाय का आधार है।

भारत में नारीवाद के प्रकार

नारीवाद के जेडर निर्माण के संदर्भ में अनेक विचार प्रदान किये और महिलाओं की शक्तिहीनता, उत्पीड़न व्यवस्थित व्याख्या की। सभी नारीवाद चिंतक और लेखक इस शब्द के प्रयोग के पहले से इस कल्पना में जीते आये थे कि एक दिन ऐसी दुनिया होगी जहाँ स्त्रियाँ अपनी व्यक्तिगत क्षमता को पहचान सकेगी। इसकी रूपरेखा बनाते हुए कुछ विचारकों ने इसे अवधारणात्मक रूप भी प्रदान किया है। आधुनिक नारीवादियों के लिए यह महत्वपूर्ण कार्य था कि वे नारीवादी विचारों को स्त्रियों के व्यापक समूहों के बीच प्रसारित करते हुए उसके प्रति आस्था पैदा करें। साथ ही यह भी महत्वपूर्ण था कि कई स्त्रियाँ विभिन्न कारणों से स्वयं को नारीवादी कहलाना पसन्द नहीं करती थी। किन्तु यह भी सत्य है कि कोई भी स्त्री जो स्वयं को नारीवादी कहलाना पसन्द करें उसी अनिवार्यता एक ही विचार में आस्था रखना हो यह भी आवश्यक नहीं। मतों की इस अवधारणा को एक ही विचारधारा में समाहित करना असम्भव कार्य है। इसलिए इसके अच्छे–बुरे अनेक कारणों की वजह से नारीवादी शब्द का बहुवाचिक तथा बहुसंदर्भिक प्रयोग अनिवार्य हो गया। इसलिए नारीवाद शब्द विभिन्न अवधारणाओं में बँट गया। ये अवधारणा अलग–अलग विचारों को प्रकट करती है लेकिन नारीवाद के सभी धाराओं में स्त्री शोषण को समाप्त करना मुख्य लक्ष्य है। अध्ययन की सुविधा के लिए वर्गीकरण निम्न प्रकार से है –

- मार्क्सवादी नारीवाद
- समाजवादी नारीवाद
- उदारवादी नारीवाद
- उग्रवादी नारीवाद
- सांस्कृतिक नारीवाद
- आधुनिक नारीवाद
- काला नारीवाद
- दृष्टिकोणीय नारीवाद

भारत में नारीवादी आंदोलन के स्वरूप व विकास

भारतीय महिलाओं के लिए समान राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों को परिभाषित करने, स्थापित करने, समान अवसर प्रदान करने और उनका बचाव करने के उद्देश्य से आंदोलनों का एक समूह है। यह भारत के समाज के भीतर महिलाओं के अधिकारों की संकल्पना है। दुनिया भर में अपने नारवादी समकक्षों की तरह भारत में नारीवादी लैंगिक समानता, समान मजदूरी के लिए काम करने का अधिकार, स्वास्थ्य और शिक्षा के लिए समान पहुँच का अधिकार और समान राजनीतिक अधिकार चाहते है।

भारतीय नारीवादियों ने भारत के पितृसत्तात्मक समाज के भीतर संस्कृति विशिष्ट मुद्दों जैसे कि वंशानुगत कानून और सती जैसी प्रथा के खिलाफ की लड़ाईयाँ लड़ी है। भारत की पितृसत्तात्मक संस्कृति ने भूमि स्वामित्व के अधिकार प्राप्त करने और शिक्षा तक पहुँच को चुनौतीपूर्ण बना दिया है।

भारत में नारीवाद के इतिहास को तीन चरणों में देखा जा सकता है पहला चरण 19वी शताब्दी के मध्य में शुरू हुआ जब यूरोपीय उपनिवेशवादी, सती की सामाजिक बुराईयों के खिलाफ बोलने लगे। दूसरा चरण 1915 से जब भारतीय स्वतंत्रता के लिए गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन में महिलाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और कई स्वतंत्र महिला संगठन उभरने लगे और अन्त में तीसरा चरण स्वतंत्रता के बाद जहाँ शादी के बाद ससुराल में कार्यस्थल में और राजनीतिक समानता के अधिकार में महिलाओं के निष्पक्ष व्यवहार का ध्यान केन्द्रित किया गया है।

भारतीय नारीवादी आंदोलनो द्वारा की गई प्रगति के बावजूद आधुनिक भारत में रहने वाली महिलाओं को अभी भी भेदभाव के कई मुद्दों का सामना करना पड़ता है। पिछले दो दशकों में लिंग चयनात्मक गर्भपात की प्रवृत्ति भी सामने आई है। भारतीय नारीवादियों के लिए इसे अन्याय के खिलाफ संघर्ष के रूप में देखा जाता है।

भारत में नारीवादी आंदोलनों की कुछ आलोचना हुई, विशेष रूप से पहले से ही विशेषाधिकार प्राप्त महिलाओं पर ध्यान केन्द्रित करने और गरीब या निम्न जाति की महिलाओं की जरूरतों और प्रतिनिधित्व की उपेक्षा करने के लिए उनकी आलोचना की गई। जिसका परिणाम यह हुआ कि कई जाति विशेष के नारीवादी संगठनों व आंदोलनों का उदय हुआ।

भारत में स्वतंत्रता की रजत जयंती के बाद का समय विकास का स्वर्ग साबित हुआ। महिलाओं ने नवीन विकास करके देश में कम्प्यूटर तथा अन्य टेक्नोलॉजी के विकास, टी.वी. युग का प्रादूर्भाव, आधारभूत संरचना के साथ बड़े उद्योगों की स्थापना, बॉलीवुड, फैशन व मनोरंजन की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है।

भारत में नारी पुरूषों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं है। वर्तमान में कृषि व्यवसाय उनके कार्यों की गुणवत्ता के बिना अधूरा है। स्त्रियाँ चाय, धान, जूट, कहवा फसलों के उत्पादन में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान निभाती है। वनों से विभिन्न वस्तुओं का संग्रह करके उनसे अनेक उत्पाद तैयार करना जैसे बागवानी, टोकरे बनाना, चटाई बनाना, बीडी तैयार करना आदि कार्य उन्हीं के द्वारा सम्पादित किये जाते है। पशुपालन उद्योग में भी नारी का महत्वपूर्ण योगदान है, वे पशुओं की देखभाल करती है, दूध दुहती है तथा चारा डालना आदि कार्य करती है।

औद्योगिक व्यवसाय तो नारी व पुरूष के कार्यों में कोई भी विभक्तिकरण नहीं करता है। भारत में ऐसे बहुत से उद्योग है जिसमें वह प्रभावी भूमिका निभाती है। जैसे वस्त्र उद्योग, रंगाई, छपाई, डिजाईनिंग, कढ़ाई ऐसे कार्य है जिनके लिए विशेष पहचान है।

भारत की नारी उपभोक्ता नहीं उत्पादक है। नारीत्व भूगोल नारी को इसी दृष्टि से देखता है। वह प्रादेशिक असमानताओं को मिटाने, गरीबी, भूखमरी, पर्यावरण का संतुलित विकास करने, संसाधनों का समुचित दोहन एवं वितरण में नारी का योगदान है।

आज प्रत्येक कार्य क्षेत्र नारी की भूमिका को पहचानने लगा है। प्रशासकीय, शैक्षिक व्यापार, परिवहन, संचार, अंतरिक्ष आदि क्षेत्रों में उसकी भूमिका प्रभावी होती जा रही है। वह नये–नये परिदृश्यों का निर्माण कर रही है। नारीवाद भूगोल महिलाओं की कुशलता व विशेषज्ञता को पहचानने पर जोर देता है। वह उनको विकास का नाभि केन्द्र मानता है।

साक्षरता व उसके स्तर में वृद्धि, मातृत्व कल्याण की योजनाएँ, शिशु मृत्यु दर को कम करना, महिलाओं के स्वास्थ्य एवं चिकित्सा पर ध्यान देना आदि ऐसे कार्य है जिन पर ध्यान दिये बिना प्रदेश का विकास संभव नहीं है। ग्रामीण समन्वित विकास, संपोषित विकास के विचार की कल्पना उनकी सामाजिक, आर्थिक दशा में सुधार के बिना अधूरी है।

भारत में नारीवाद एक आंदोलन के साथ एक विचारधारा भी है जिसने विभिन्न तरीके और साधनों को अपनाकर महिलाओं के लिए समानता, सम्मान, अधिकार और सशक्तिकरण के उद्देश्य को प्राप्त करना चाहा है।

नारीवाद महिलाओं को समान सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अवसर प्रदान करता है। नारीवाद का एक अर्थ यह भी है कि एक महिला जो करना चाहती है, जीवन में जो बनना चाहती है उसे वह सब करने की आजादी प्राप्त हो। भारत में नारी का योगदान आज शोध का विषय बन चुका है।

भारत में नारीवाद का राष्ट्रीय परिदृश्य परिवर्तित हो गया है। भारत में स्त्रियों ने राष्ट्रीय परिदृश्य को अन्तर्राष्ट्रीयता की ओर नवीन दिशा प्रदान की है। भारत में महिलाओं ने एक समूह के रूप में अपने साथ हुए अन्याय के विरोध में आवाज उठाई है और भारत के समाज को नवीन स्वरूप प्रदान किया है।

निष्कर्ष

नारीवाद के माध्यम से महिलाओं को वैधानिक अधिकार (Legal Rights) प्रदान करने पर बल दिया जाता है। महिलाओं को भी पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए उन्हें शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिए। महिलाओं पर घरेलु हिंसा नहीं हो, प्रजनन अधिकार, मातृत्व अवकाश, समान वेतन संबंधी अधिकार, यौन उत्पीडन, भेदभाव एवं यौन हिंसा से बचाव, राजनीति अधिकार और महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आलेख : नारीवादी आंदोलन पृष्ठभूमि एवं विकास : वैश्विक संदर्भ/शिवानी कन्नौजिया
2. पश्चिमी नारीवाद की अवधारणा और विभिन्न नारीवादी आंदोलन : आलेख (डॉ. नमिता सिंह)
3. नैयर, श्रीमती ऊषा : "ए.आई.डब्ल्यू.सी. एट अ ग्लान्स, द फर्स्ट ट्वन्टी फाइव इयर्स 1927–152" ई–बुक
4. मानवाधिकार : नई दिशाएँ, वार्षिक अंक – 19, सेंट जोसेफ प्रेस, नई दिल्ली, 2013
5. नेशनल क्राइम रिकॉर्डस ब्यूरो
6. कौशाम्बी, दामोदर एवं धर्मानन्द, प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009

❖◆❖